प्रथम अध्याय

कथावस्तु

कथावस्तु

कारसदेव की गोट का अर्थ और उत्पत्ति पर व्याख्या करने के अनन्तर सर्व प्रथम उसके कथानक पर विचार करना आवश्यक होगा ।

कथानक

दस पहाड़ियों में दस श्रेष्ठ गायें एकलादी के पास में थीं । एक दिन जानवरों को दुहने के बाद मस्तक में आंकल लगा कर दूध की हेप सिर पर रख कर वहां से जाती है । रास्ते की गली में राजा गरुड़हा का मोती गजराज मदमस्त रास्ता रोके हुए खड़ा है । एकलादी महावत से हाथी हटाने का अनुरोध करती है --'मेरी राह का हाथी हटा लो, मुझे देर हो रही है; बड़े घर के लोग मेरी धौरी गाय के दूध की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।'

लेकिन महावत हाथी न हटा कर उससे बहुत बहस करता है --'इसे हाथी मात्र मत सम्बोधित करो । यह तो राणाओं के राजा गरुड़हा का मदमस्त मोती गजराज है । इसलिए तुम दूसरे रास्ते से चली जाओ ।'

एकलादी फिर भी आग्रह करती है, महावत चिढ़ कर कहता है --'तुम-सी हठीली लड़की गूजर जाति भर में मैंने नहीं देखी है ।'

नाराज़ होकर वह दूध की हेप आदि को ठीक से संवार लेती है और गुरु-जनों का स्मरण कर दाहिने पांव के अंगूठे से हाथी की जंजीर को पकड़ कर खींच देती है । उसकी शक्ति से हाथी हार कर मार्ग से अलग हो जाता है और एकलादी उसी गली के बीच से गर्व से चली जाती है ।

महावत डर कर भागता हुआ राज दरबार जाता है --'गूजर की बेटी शक्ति में अद्वितीय है । मोती गजराज को उसने गली में परास्त करके उसका मान-मर्दन कर दिया है ।'

राजा को महावत की बात सुनकर आश्चर्य होता है और शंका करता है -- 'क्या तुमने हाथी की खुराक कम कर दी है या जितना अपेक्षित पानी दिन में पिलाना चाहिये था उतना नहीं दे रहे हो ? किस तरह उसने हाथी को हरा लिया ? इसका विवरण मुझे दो ।'

महावत बातें बनाता है -- 'गूजर की बेटी के जादू का मैं क्या बखान करूं, उसने मंत्र पढ़कर मोती गजराज को माले लगाये हैं जिससे वह हार जाता है । वह लड़की अपूर्व बलशाली है, तुम तक उससे जीतने में समर्थ नहीं हो । वह चढ़ाई करके कुछ ही दिनों में तुम्हारी गढ़ी को नष्ट-भ्रष्ट कर देगी । इसलिए बेहतर है कि अपने बेटे कुंवर नन्दलाल और इकलादी की ब्याह सगाई करा लीजिए और रनिवास की बहू बना लीजिए, अन्यथा तुम्हारा सारा राज्य-पाट मिट जायेगा । मेरी विनती को स्वीकार कर लीजिये ।'

राजा सहमत होकर गूजर के यहां घुड़सवार भेज देता है । वे जाकर गूजर के घर को घेर लेते हैं -- 'राजा गन्धपदुरा की आज्ञा है, तुम्हें तत्काल राजधानी में बुलाया है ।'

गूजर सवाल करता है -- 'किसलिये मुझे बुलाया जा रहा है ? मैंने राजा के न तो बिना आज्ञा के खेत जोते हैं और न मेरी किसी गाय ने उनके किसी धान के खेत को ही चर लिया है ?

गूजर की आनाकानी पर वे कहते हैं -- 'राजा के पास सीधे चलने से तुम्हारे नाम में वृद्धि होगी अन्यथा अपयश मिलेगा ; बलपूर्वक ले जाने पर लोग-बाग गलत समझेंगे औरक राजा भी क्रुद्ध होगा । तुमको जो कुछ भी कहना-सुनना है राजा से ही कहना ।'

गूजर फिर अपनी दयनीयता दिखलाता है --'मेरे पांव में जूता नहीं है, गांठ में पर्याप्त पैसे नहीं हैं, सिर में बांधने के लिए कोई पगड़ी नहीं है, ऐसी खराब अवस्था में राजा से मिलने में लज्जा प्रतीत होती है । चढ़ने के लिये कोई सवारी भी नहीं है । लोग-बाग मुझे ऐसी अवस्था में देख कर क्या सोचेंगे-कहेंगे ?

गूजर अपने घर में बतलाता है --' राजा के यहां मुझे बुलाया गया है ।'

एह्लादी पिता को जूते, पर्याप्त पैसे, मिर्जई पगड़ी और सवारी आवागमन का साधन दे देती है। वह राजा से मिलने के लिये चल देता है।

राजा उसका स्वागत-सत्कार करता है। उसके बैठने के लिये आसन डलवाता है। इसके बाद राजा प्रस्ताव करता है -- 'मेरे भाई, तुम्हारी बेटी एह्लादी और मेरा बेटा दोनों ही ब्याह के योग्य उचित पात्र हैं इसीलिये दोनों का धर्म-संगत ब्याह रच देना चाहिये।'

एह्लादी का ब्याह हो चुका है, गूजर प्रार्थना करता है --'राजा तुम तो प्रजा के धर्म पिता-माता हो, एह्लादी मेरी बेटी की तरह तुम्हारी भी है। वह विवाहित है। कोरे भात को रांधा जा सकता है लेकिन रंधे भात को कोरा समझकर दुबारा रांधा नहीं जा सकता। यह अधर्म कैसे करूं ? इतनी कड़ी सजा राजा मुझे मत दो।'

इसके बदले अगर तुम रुपया-पैसा मांगते तो मैं तुम्हारा छकड़ा भरा देता। गाय मांगते तो उसे खुलवा देता लेकिन तुम्हारा यह अनोखा प्रस्तावित दंड असह्य है इसीलिए मैं तुम्हारा राज्य छोड़ दूंगा।'

क्रुद्ध होकर उसे विवश करने के लिये राजा अत्याचार करता है। उसको हथकड़ी-बेड़ी, तौक से जकड़ दिया जाता है। हरे बांसों से उसकी पिटायी की जाती है। अन्त में गूजर विवश हो जाता है -- 'राजा मुझे घर जाने दो, कुटुम्ब की सलाह लेकर ब्याह कर दूंगा।'

उसकी बात पर विश्वास करके राजा भरे दरबार में उसे छोड़ देता है। वह घर जाकर टूटी खाट पर लेट रहता है। बेटी को यह व्यवहार विचित्र-सा लगता है --'पिता क्या तुम्हें सिर दर्द हुआ है या बहुत जोरों से ज्वर चढ़ आया है ? टूटी खाट पर क्यों लेटे हो ? ' वह दुर् दुःखित होकर कहता है --'अच्छा होता बेटी यदि तू जन्मते ही मर जाती या भादों मासों की बिजली तुम पर गिरती और तू नष्ट हो जाती। तुम्हारी वजह से राजा से शत्रुता हो रही है।'

बेटी पिता की परेशानी समझ नहीं पाती --'आज ही क्यों मैं तुम्हें इतनी बुरी लगने लगी जो मरने की कामना कर रहे हो ? ' वह बात स्पष्ट करता

है -'उस दिन तुम्हारे मोटी गजराज के परास्त करने के पराक्रम से प्रभावित होकर राजा अपने बेटे से तुम्हारा ब्याह करने को विवश कर रहा है। तुम्हारी शादी दुबारा करने से जाति- बिरादरी में मेरा सम्मान नष्ट हो जायेगा और मेरे यहां कोई पानी तक नहीं पियेगा, राजा से इन्कार की स्थिति में वह मेरे परिवार आदि सभी कुछ को नष्ट भ्रष्ट कर देगा। दोनों ही स्थिति में अपने -गांव - देश में किस तरह रह सकूंगा? राजा की अनोखा जुर्माना मुझे मकूल कर रहे हैं। जब भाग्य ही खराब है तो शैया पर विश्राम कैसे करूं?

क्रोधित पुत्री पिता को आश्वासित करती है -' मेरे लिए तुम चिन्तित मत हो सुख से विश्राम करो। मैं राजा पर आक्रमण करके उसके आवास को नष्ट-भ्रष्ट कर ऊपर मिट्टी में परिवर्तित करके धान तक रोप दूंगी।'

पिता आश्वस्त होकर सो जाते हैं। रात्रि में माता-पिता के पलंग और पशुओं आदि के सहित एकलादी उस राज्य से भाना जी के राज्य में प्रवेश करती है। उसके आगमन से भाना जी के कंगूरे हिलने लगते हैं। वह चिन्तित होते हैं-' क्या शत्रु ने आक्रमण कर दिया है या पशुओं ने उत्पात किया है? कंगूरे हिलने का क्या कारण हो सकता है?

भाना जी की पत्नी समझाती है -' विपत्तिग्रस्त लड़की शरण के लिए तुम्हारे राज्य में आ रही है। जो शरण देने की सामर्थ्य तुममें चार हो तभी उसे यहां रखना साधारण लड़की के समझने का भ्रम मत करना यह तो भवानी का साक्षात् अवतार है।'

पत्नी की बात का विश्वास करके भाना जी ने एकलादी को देवीवत् सम्मान दिया। तत्काल पांवों से जूते निकाल दिये, बेसन्ती पगड़ी भी उतार दी, गले पूजा जैसा आंचरा डाल लिया, आरती सजा दी और आधीनता सूचक दांतों में तिनका दबा कर उसके पास गये और अनुरोध किया -' भवानी मैं तुम्हारे रहने की अच्छी व्यवस्था कर दूंगा। तुम्हारे लिए मन्दिर बनवा दूंगा। जो कुछ भी करने की इच्छा हो मेरे यहां कर सकती हो। यहां पर सभी लोग तुम्हारा सम्मान करेंगे।'

एकलादी उनकी बातों पर विश्वास करके वहीं बस गयी। उसने आराधना के

लिए शिव का मन्दिर बनवाया । राजा गरूरड़ा से अपमान का बदला लेने के लिए उसने शिव का कठोर तप किया । नित्य-दिन बारह वर्ष तक उसने शिव को जल चढ़ाया । अन्त में ज्योति रूप में शिव प्रसन्न होकर प्रगट हुए और उन्होंने उससे वर मांगने को कहा ।

एक्लादी ने दो भाइयों की याचना की जो राजा गरूरड़ा से उसके अपमान का प्रतिशोध ले सकें ।

शिव ने आपत्ति की – ' तुम्हारे माता - पिता दोनों ही काफी वृद्ध हो गये हैं ।'

लेकिन उसके आग्रह पर शिव वरदान देते हैं – ' बेटी, तुम चंबल नदी में नहाने के लिए जाना, वहां उल्टी धारा में बहते फूल के लिए झोली फैला देना, उसमें वह आ जायेगा । घर में तुम्हारे देहरी लांघते समय दो भाइयों में परिणित हो जायेंगे । इसी लिए अपनी मां को प्रसूति-गृह में लिटा देना ।'

सूर्योदय होने पर एक्लादी अपनी सहेलियों के साथ स्नान के लिए चंबल घाट जाती है । स्नान के समय उसे उल्टी धारा में फूल बहता दिखता है । उसके लिए वह झोली फैला देती है और फूल स्वयं झोली में आ जाता है । जब वह घर आती है, देहरी लांघते समय फूल दो भाइयों में परिवर्तित हो जाता है । वह मां से प्रसूति-गृह में लेटने के लिए कहती है । बच्चों को देख कर मां क्रुद्ध होती है, दुष्टी मुसीबत न जाने किसके बच्चे उठा कर पैदा कर रही हो । ऐसा प्रतीत होता है यह स्थान भी तुम्हारे कारण छोड़ना पड़ेगा ।'

एक्लादी मां को शिव के वर के सम्बन्ध में समझाती है । मां प्रसूति-गृह में लेट जाती है । निर्धनतावश मात्र दो भाइयों के उत्पन्न होने की प्रसन्नता में घरों में वह वितरित करती है । सभी लोग चकित होते हैं – ' इन-बूढ़े-बुढ़ियों के सन्तान होना किस तरह संभव है ? क्या किसी सौतेली मां द्वारा परित्यक्त है या भगवान का विधान परिवर्तित हो गया है अथवा शिव से वरदान की प्राप्ति हो गयी है ।'

एकलादी उनको घर के कारण कवारी उत्पत्ति की बात समझाती है। वह भाईयों को अनब्याही गायों का दूध पिलाती है।

भाई दिन दुगने रात चौगुने बढ़ते हैं।

छै मास की आयु में ही वे पशुओं को बुलाने, खोलने, बन्द करने लगते हैं।

एक दिन भाई गुरुपाल घर के जानवरों को बिना सूचित किये ही बाहर ले जाता है। पशु गृह में जानवरों को न देख कर एकलादी समझ जाती है यह भाई की शरारत है। वह भाई के पास जाती है।

उस समय वह अमरबेल से शापित मनोज की घनी झाड़ी की छाया में शयन कर रहा था। उसने भाई को जगाया। जागते ही भाई जिद पकड़ गया - 'मेघल मामा की दुकान से पक्की मांवर का घोड़ा मेरे लिए बनवाओ।'

बहिन समझाती है - 'मेघल हाथों का कोढ़ी, पांव का पंगु और नेत्रहीन है - वह किस तरह तुम्हारे लिए घोड़ा बना सकता है। बारह वर्ष से उसने मट - जाल तक नहीं देखी है। कुछ दिनों बाद जब बसंत ऋतु का बाजार लगेगा मैं अच्छी कीमत का हरियाना का सुन्दर घोड़ा खरीद दूंगी।'

भाई मेघल के स्वस्थ होने का उपचार बतलाता है - 'अनब्याई गाय के दूध से मेघल को नहला दो, इससे वह स्वस्थ होकर मांवर का घोड़ा मेरे लिए बना देंगे।'

बहिन शंका करती है - 'सदैव अनब्याई गाय से दूध नहीं निकलता है?"

भाई आश्वासित करता है - 'तुम घर तो जाओ। अनब्याई गाय भी ब्याई गाय की तरह लबालब भरी रहेगी। उसे दुहने के बाद एक नीम की टहनी तोड़ लेना मेघल को स्नान कराना या टहनी से छींटा दे देना।'

बहिन को घर जाने पर अनब्याई गायें लबालब दूध से भरी दिखती हैं। 'सचमुच ये अपमान का बदला लेने में समर्थ हैं' उसे विश्वास हो जाता है। श्रृंगार

करके वह दूध की लेप और नीम की टहनी के साथ मेघल के द्वार पर गयी। मेघल उस समय सो रहा था। उसकी पतिव्रता पत्नी सेवा में लीन थी। एकलादी ने जोरों से 'मामा' कह कर पुकारा। मेघल की पत्नी निबुलिया ने आवाजें तो सुनी किन्तु सुखपूर्ण निद्रा में पति को लीन देख कर जगाना उचित न समझा।

आवाज से मेघल जाग गया - "निबुलिया दरवाजे पर देखो मेरी भान्जी कहां से आई है।"

दूध की लेप लिए एकलादी को देखकर दुःख और निराशा से निबुलिया ने कहा - "सामान खरीदने के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं और विनिमय के लिए पीतल के बर्तन नहीं है, कहीं और जाकर बेचो।"

एकलादी ने कहा - "मुझे मामा से काम है, उन्हें यहां बुला दो।"

पत्नी ने इन्कार किया - "सोये स्वामी को जगाकर, पलंग से उतार कर, मैं कष्ट नहीं दूंगी। तुम स्वयं अन्दर जाकर बातें कर लो।"

एकलादी ने अन्दर जाकर मेघल पर नीम की टहनी से दूध का छींटा दिया। इससे मेघल पूर्णतया रोग-विकार विमुक्त हो गया। सभी अंग पूर्ण और स्वस्थ हो गये। चमत्कार के वशीभूत, श्रद्धा से गद्गद उसने एकलादी के पैर पकड़ लिये - "तुम तो मेरे लिए दूसरे भगवान की तरह आ गयीं, बताओ मैं तुम्हारा क्या हित करूं ?"

एकलादी ने कहा - "मामा, तुम गढ़ी के पार सिर्फ पहली बार फावड़ा चलाना, उससे जितनी भी मिट्टी मिले वह पत्नी के सिर पर रख देना। वह उसे मटसाल में रांधे। उसी से मात्र पहली भांवर का घोड़ा बना कर तुम लाना।"

मेघल ने ऐसा ही किया किन्तु लम्बे समय तक अभ्यास छूट जाने से पहली भांवर का घोड़ा टेढ़ा-मेढ़ा बन जाता है। ऐसा खराब घोड़ा देते हुए उसे लज्जा प्रतीत होती है, वह अनेकों घोड़े बना लेता है और श्रेष्ठतम एकलादी के पास ले जाता है, शेष को निबुलिया बाजार में बेचने ले जाती है।

शूरपाल घोड़ा को देख कर आपत्ति करता है - 'केवल मुझे पक्की मांवर का घोड़ा चाहिए, यह तो कच्ची मांवर का है। इस पर सवारी करने से मेरे क्षत्रियत्व का मान घट जायेगा। राजा के पास इसे ले जाओ। वह प्रसन्न होकर पुरस्कृत भी करेगा।'

'पक्की मांवर का घोड़ा खराब बना है', केवल कहता है लेकिन शूरपाल की हठ पर उसे लाना ही पड़ता है।

शूरपाल घोड़े को घुड़साल में बंधवाकर असली घोड़े की तरह पैरों में अगाड़ी-पिछाड़ी, चांदी की कड़ी मुख और कंठ में लगवाता है।

बहिन बचपने पर हंसती है - 'मेरे भाई, मिट्टी का घोड़ा पानी पड़ने से गल जायेगा। इस बार उत्तरायण में पूना भाग का मेला लगने दो मैं अच्छी कीमत का घोड़ा खरीद दूंगी।'

भाई उत्तर देता है - 'बहिन, मैं मोल के घोड़े की सवारी नहीं कर सकता। मेरे गुरु का सम्मान नष्ट हो जायेगा।

शूरपाल ने गुरु नाम लेकर प्रभु का ध्यान किया। अर्ध रात्रि में मंत्र पढ़कर घोड़े के सभी अंगों का स्पर्श किया। मिट्टी के घोड़े में प्राण संचरित हो गये। हरी घास उसके खाने के लिए डाली। तत्पश्चात शूरपाल जाने के लिए तैयार होते हैं -।

रुखादी को आश्चर्य होता है - 'घर में किसी ने तुम्हें क्या कड़ी बात कह दी है जिससे तुम बुरा मान कर घर छोड़ रहे हो?

'मैं तुम्हारे अपमान का प्रतिशोध लेना चाहता हूं।

बहिन समझाती है - 'तुम तो अभी मात्र सात साल के बच्चे हो। होठों से अभी तक दूध की धार टपकती है। युद्ध के दांव-पेंचों से तुम अपरिचित हो। गढ़पड़ता के लड़ाकू भाट तुम्हारा घोड़ा तक छीन लेंगे।'

सूरपाल अपने प्रयोजन को स्पष्ट करता है - 'बहिन, मुझे मनुष्य योनि में बार-बार नहीं आना है, शिव को भी ऐसा वरदान दुबारा नहीं देना है, न मैंगल को ही ऐसा घोड़ा दुबारा बनाना है, तुम्हारे जैसा कठोर तप भी कोई दुबारा नहीं कर सकता। अपमान के प्रतिशोधवश मुझे रातों में ठीक से नींद नहीं आती है अतः मेरी आरती उतार कर और आशीर्वाद देकर मुझे युद्ध के लिए विदा करो।'

'गंगा-यमुना के पानी की वृद्धि की तरह तुम्हारी तलवार की धार बढ़े', बहिन ने शुभकामनाएं व्यक्त कीं - 'मांगर को तुम पलक टेढ़ी मात्र करते ही पराजित कर दो।' उसने एक इच्छा व्यक्त की - 'मार्ग में बछड़ी गाय देख कर उसे काशी फांक में भेंट कर देना।'

इसके बाद सूरपाल ने भीखा शकुनी नौकर के साथ शत्रु देश के लिए घोड़ा लंगूरी चाल से बढ़ा दिया।

वे चल कर शत्रु देश में पहुंचे। वहां सूरपाल को राजा द्वारा रखी गयी कलार की मदिरा की भट्टियों की आग देख कर उसकी आंखों में चकाचौंध होने से उसने विस्मय से पूछा - 'क्या यह सोने की लंका है या वन में आग लगी है?'

'ये राजा द्वारा बसाई पांच कलारों की रात-दिन चलने वाली भट्टियां हैं,' भीखा ने उत्तर दिया।

भट्टी के पास जाने पर सूरपाल से कलारिन - शराब बेचने वाली ने प्रश्न किया - 'किस काम से तुम आ रहे हो और कहां जाना है?'

सूरपाल ने अपमान के प्रतिशोध का प्रयोजन बताया। अपने राजा का शत्रु समझ कर सूरपाल द्वारा मदिरा मांगने पर कलारिन ने बहाना बना दिया - 'मदिरा पात्र खो गया है।'

सूरपाल आग्रह करता है, वह बहाना बनाती है। कटु बातों का आदान-प्रदान होने लगता है।

क्रुद्ध होकर कलारिन कहती है - 'मैं ऐसे-वैसे द्वारा नहीं राजा की रखी हुई हूं। तुम्हारे जैसे न जाने कितने पीने वाले यहां आते हैं और जाते हैं। तुम

तो गुजर के लड़के हो जो खट्टी छाछ पीते हो, तुम मदिरा के स्वाद को क्या जानो !

शूरपाल गुस्से से लाल हो जाता है, उसके मुंह के बाल फड़कने लगते हैं-' जरा जबान सम्भाल कर बातें करो।'

वह चमत्कार करता है - एक रूप में उससे साथ वार्तालाप करते हैं और दूसरे रूप में जाकर सारी शराब पी लेते हैं, बर्तन तोड़-फोड़ देते हैं। अन्त में वह कहता है -' कलारिन, तुम अपनी दुकान देखो, मैं शत्रु की राजधानी में जा रहा हूं।'

उसके कुछ दूर चले जाने पर कुछ प्रयोजनवश कलारिन जब अन्दर जाती है तब रिक्त पात्रों पर दृष्टि पड़ती है। वह अपने दुर्व्यवहार के कारण अनिष्ट की आशंका से कांप उठती है। वह विलाप करती हुई पीछे-पीछे भागती है, पैर पकड़ कर विनती करती है - घुड़सवार भगवान, मैं विनती करती हूं, अज्ञानान्ध मानव के भ्रम में जो मैंने तुम्हारा अपमान कर दिया है उस अपराध को क्षमा कर दो।' कलारिन के काफी दयनीय होने पर वह दयार्द्र होकर भभूत उठाकर उसे दे देता है -' इससे सभी कुछ पूर्ववत् हो जायेगा।'

शत्रु के मांकेवार में शूरपाल डेरा डालता है और मुरली पक्षी की सुनत कील खोलता है। उसे प्रेम से पुचकार पुचकार कर सिर पर हाथ रख फिराते हुए कहता है --' मैंने मुरली तुम्हें चिरौंजी चुगायी है और स्वादिष्ट दूध पिलाया है अतः तुम नमकहरामी मत करना। शत्रु देश में अपना पराक्रम दिखाओ जिससे मेरी प्रतिष्ठा न घटे। राजपुरी को अच्छी तरह देख-भाल कर मुझे विवरण दो।'

मुरली आज्ञा का पालन करती है। ऊंचे मठ में बैठ कर स्वर भरती हुई देखने भालने लगी। उस समय नीती कमीत में राजा की गायें चरने के लिए आई थीं। छोटे बछड़े-बछियां पशुगृह में थीं।। शूरपाल को यह समाचार उसने दिया। शूरपाल ने जाकर चरवाहों से पूछा --' चरवाहों, तुम किसकी गायें चरा रहे हो ?'

'राजा की गायें', उन्होंने उत्तर दिया।

शूरपाल ने मुरली से कहा। उसने मंत्रमुग्ध करने वाले स्वर से सभी पशुओं को सम्मोहित कर दिया। वे स्वयं खिंचती चली आयीं ?। चरवाहों के रोकने से

प्रयत्न करने पर शूरपाल ने उनकी पिटायी की।

वे भाग कर राजा के पास गये --'राजा एक घोड़े वाले की मुरली से सभी जानवर मोहित हो गये हैं। रोकने पर उसने जोरों से मार लगायी है।'

राजा ने तत्काल फौज को सजने का आदेश दिया। वह फौज के साथ युद्ध के लिए चल दिया। फौज के चलने से पत्थर मुड़कर कंकड़ बन गये और कंकड़ मुड़ कर तीर की तरह तीक्ष्ण हो गये, धूल इतनी अधिक उड़ी कि सूर्य ढंक गया और दिन अंधेरी रात जैसा लगने लगा।

ऐसी विचित्रता का शूरपाल ने कारण जानना चाहा। भीखा ने बताया --'राजा की डेढ़ हजार फौजें युद्ध के लिए आ रही हैं।'

माया के द्वारा लगभग डेढ़ पहर तक शूरपाल ने मोती की वर्षा करायी। सम्पूर्ण सेना उसी को एकत्रित करने में लग गयी। सेना ने मोती एकत्रित करने के बाद सोचा --'ये मोती तो हमारे जीवन-निर्वाह के लिये आयु पर्यन्त तक पर्याप्त हैं फिर क्यों व्यर्थ में युद्ध करें।'

सेना वापस चली गयी। सैनिक अपने घरों के लिये लौट गये। सैनिक और आर्थिक स्थिति गव्वरुद्दा की पूर्णतः नष्ट करके शूरपाल ने अग्नि के अपमान का प्रतिशोध लिया। तत्पश्चात् शूरपाल ने हरियाना गांव चलने की इच्छा व्यक्त की। भीखा ने विरोध किया --'गव्वरुद्दा की बेटी धुरा जाट को वहां ब्याही है।'

शूरपाल के आग्रह पर भीखा विवश हो जाता है। जब ये लोग वहां पहुंचे गव्वरुद्दा की पुत्री पानी कुंए से उस समय भर रही थी। गायें उसे पहिचानी-सी लगीं। उसने प्रश्न किया --'तुम कहां से आ रहे हो और कहां जाना है? ये गायें कहां से ली हैं?'

'पूना बाजार से गायें खरीदी हैं'; शूरपाल ने कहा --'इन्हें अपने यहां ले जा रहा हूं। आज मैं तुम्हारे गांव में विश्राम करूंगा।'

बेटी शंकित होती है --'पति मेरे यहां बेखबर हैं, भाई संभवतः ससुराल गये हैं। मात्र पिता को अकेले पाकर रात में पशु तुमने चुरा लिये हैं।'

'चलचारी, गंगापार ऐसी झूठी बातें मत करो', शूरपाल ने कहा -- 'मैंने काफी अच्छी अच्छी रकम दी है इनकी।'

बाटनी ने कहा -- 'घोड़े वाले, मैं अक्षय तृतीया के त्यौहार में मायके गयी थी और पुष्य :नक्षत्र या माघ पूस: में घर छोड़ा था तब सभी जानवर थे और आज तो सभी जानवर तुम हांके लिये जा रहे हो, आखिर इतनी जल्दी हो क्या गया है ?'

'तो तुम यहाँ खड़ी क्या कर रही हो', शूरपाल ने व्यंग्य से कहा -- 'क्यों नहीं, दौड़ती हुई, अपने मायके जाकर इत्मीनान कर लेती हो। मेरी सुन्दर गायों को देखकर धोखा न खाओ।'

नाराज़ होकर वह कसम खिलाती है -- 'तुम्हें गंगा की भारी कसम है जो यहाँ से गये जब तक पानी रख कर घर से मैं पुनः वापस न आ जाऊँ।'

'डोचा :डोगला: चोरी करके आधी रात में भागता है'; उसने सफाई देने का प्रयास किया -- 'हम तो दिन-दहाड़े सबके बीच से जा रहे हैं। हम भोलानाथ के अवतार हैं साधारण मानव नहीं।'

वह गुस्से से जलती-भुनती घर गयी। उसका पति मायके के पकवान से अपने को ठूंसे गहरी निद्रा में लीन था। उसने आग-बबूला होकर अपने पति को लात लगायी। कच्ची नींद टूटने पर वह क्रुद्ध होकर बोला -- 'तूने मुझे क्यों जगाया है ?'

पत्नी ने विनती की -- 'एक घुड़सवार मेरे पिता के पशु-धन का अपहरण करके यहाँ से जा रहा है। उसने मेरा मायका और तुम्हारी ससुराल उजाड़ दी है। उससे लड़कर तुम्हें जानवर छीनने हैं।'

'आग लगे ऐसी ससुराल में और उससे भी अधिक मायका बड़े भाड़ में च हु जाये'; पति बिगड़ता है -- 'जरा से जानवरों के लिये लड़ कर मैं उपहास का पात्र नहीं बनूंगा।'

पत्नी पति को धिक्कारने लगी है -- 'मर्द की जगह तुम्हें औरत होना चाहिए था। हथियारों को क्यों बांधा है ? माता के दूध को लजा दिया है। तुम्हारी युवावस्था को धिक्कार है।। तुम्हें छोड़कर अब मैं घुड़सवार के साथ जा रही हूँ।

उसके साथ जाकर अपनी गायों की देखभाल करूंगी । उन्हीं की गोबर की टेप सिर पर रखूंगी और जहां भी जाऊंगी तेरी बहुत बदनामी ही करूंगी ।'

पति बहुत मत्र पढ़ता है --'तुम मेरी पत्नी की बातों पर ध्यान न देना । अब देखना सब जगह बहुत बड़ी लड़ाई होगी और उसमें शत्रु को बांध चीर कर नष्ट कर दूंगा । लेकिन देखो, अब असाढ़ लगा है; इसके बाद सावन लग जायेगा । सावन में वर्षा निरंतर होती रहती है । सूर्य बहुत कम निकलता है, घना अंधेरा छाया रहता है ऐसी स्थिति में युद्ध करने से प्रलय मच जायेगा । रानी, इसीलिये मैं युद्ध के पक्ष में नहीं हूं ।'

पत्नी और भी क्रुद्ध हो कर कहती है --'तुम्हारा मनुष्य होना निरर्थक है । अगर पुतला-पुतली होते तो मैं भेड़ा न्यौछावर कर देती । तुम्हारी अच्छी तरह से शादी रचती और कन्यादान देती । ब्याह में गाना गाती । तुमको हरे कांच की चूड़ियां पहिना कर, कुम्भ से भेंट कर ससुराल के लिए विदा कर देती ।'

पत्नी की कटु बातें उसके लिए असह्य हो जाती हैं --'रानी ऐसी बातें मत करो । तुम्हें ये सब कहना शोभा नहीं देता है । मैं घुड़सवार को गंगा पार से जाने नहीं दूंगा और उससे गायें छुड़ा दूंगा ।'

ढेड़ हथियार कांधे लगाकर पति युद्ध के लिये चल देता है ।

भीखा झूरपाल पर बिगड़ता है --'तुमको मैंने यहां न आने के लिये हजार बार मना किया था लेकिन तुमने मेरी एक बात भी नहीं सुनी, अब हरियाने का राजा युद्ध के लिये सेना सहित आ रहा है ।'

झूरपाल भी क्रुद्ध होकर कहती है --'भीखा, जबान संभाल कर बातें करो । मैं भी देखता हूं हरियाने की राजा की ताकत को ।'

झूरपाल माया से राजा को दाढ़ीवाला बकरा और सेना को भेड़-बकरी बना देता है । भीखा को यह समूह दे कर कहा --' इन्हें जाकर चरा लाओ । मैं यहां का दृश्य अवलोकन करता हूं ।'

पत्नी यह चमत्कार देख कर चकित रह जाती है, प्रार्थना करती है --'मुझे पता नहीं था कि तुम शिव के समान वरदानी हो। साधारण मानव समझ कर मैंने तुम्हारा अपमान कर दिया। मेरी भूल को माफ कर दो और कृपा करके सेना और पति को पुनर्जन्म देकर मेरे गांव को पुनः बसा दीजिये।'

'तुम अपने घर जाओ,' शूरपाल ने कहा --'इस समय मैं कुछ नहीं कर सकता। भीखा उन्हें चराने ले गया है।'

पत्नी काफी विनती करती है अन्त में दयालु होकर शूरपाल ने भभूत उठा कर फौज और राजा पर फेंकी और उन्होंने पुराना स्वरूप प्राप्त कर लिया। राजा ने भी क्षमा-याचना की। शूरपाल ने भीखा से कहा --'आधी झांझ में घरों में गायें पहुंचा दो।'

आज्ञा पालक भीखा ने ऐसा ही किया।

विश्राम करने की इच्छा से शूरपाल मांकेश्वर में उतरा। घोड़ा को कलब वृक्ष से बांध कर उसकी आड़ी-पिछाड़ी लगायी। वन मुरली को पवित्र स्थान में टांगा। वह बाग में विश्राम करने लगा। प्रतिशोध की भावनावश वह कई मास से सुख की नींद नहीं सोया था इसीलिए अब चिन्ता विमुक्त होकर गहरी नींद में सो गया।

उसी समय पृथ्वी के विषैले नाग ने निकल कर उसे तलवे में डंस लिया। विष के प्रभाव से शूरपाल मुर्दे के समान हो गया। तत्पश्चात सर्प पृथ्वी में समा गया।

मुरली की दृष्टि डंसते हुए सर्प पर पड़ गयी। उसने घोड़ा से कहा --'लीला, तुम्हारे चढ़ने वाले और मेरे बजाने वाले को पृथ्वी के विषैले नाग ने डंस लिया है। पर हम लोग घर में समाचार भी कैसे दे सकते हैं, यह निर्मोही तो मेरी अच्छी तरह से गुनत कील लगा गया है और तुम्हें आड़ी-पिछाड़ी लगायी है ? हम लोग कुछ भी नहीं कर सकते।'

घोड़ा ने कहा --'मुरली, तुम चोंच से गुनत कील को निकाल कर मेरी आड़ी-पिछाड़ी को काटो जिससे मैं बाग से निकल सकूं।'

मुरली ने ऐसा ही किया। काफी ऊंचाई पर वह आकाश में उड़ी। रातों रात भागते-चलते हुए घर पहुंची। वहां कंगूरे पर बैठकर करुण आवाज़ करने लगी। रत्नावली की दृष्टि मुरली पर गयी। भाई को शत्रु देश में छोड़ कर अकेली आई मुरली की नमक हरामी पर वह क्रुद्ध होती है --'मैं तुम्हें शाप देती हूं, तुम्हारी सारी कीर्ति नष्ट हो जायेगी।'

मुरली ने आगमन स्पष्ट किया --'गुरपाल ने गरुड़ध्वज को बुरी तरह से परास्त किया। हरियाने गांव में जाट को पलक झपकते ही जीत लिया। काशी में घर-घर में गायें बंधवा दी। वे भक्ति से ठीक से न सोने के कारण अवकाश पाकर वह सो गये। जब वह विश्राम कर रहे थे, सर्प ने उन्हें डंस लिया। मैं समाचार देने के लिए भागती तुम्हारे पास आ रही हूं।'

रत्नावली चिन्तित होती है --'कारस भाई तो काफी गहरी नींद में सो रहे हैं। असमय जागने पर बहुत क्रुद्ध होंगे।'

मुरली ने युक्ति सुझाई--' कम्लापत बेटी को गोद में लेकर कारस के पलंग पर बैठा दो। उसकी किलकारी के शोर से वह जाग जायेंगे। तुम स्वयं खंभे की ओट में छिप जाना।'

उसने ऐसा ही किया। कारस की कच्ची नींद टूट गयी। हाथ सतर्कतावश खांडे पर चला गया लेकिन भान्जी को देख कर क्रोध बढ़ गया --' भान्जी को क्यों तुमने मेरे पलंग पर बैठाया। आज अगर उसे कुछ हो जाता तो कितने कलंक का विषय बन जाता?'

रत्नावली ने गुरपाल के सर्प दंश के सम्बन्ध में सूचना दी। कारस ने मुरली से उस स्थान में ले चलने के लिए कहा।

मुरली ने कहा --' मैं तो हल्की-फुल्की हूं जो अभी स्थानों, झाड़-झंखाड़ों के बीच से गुजर सकती हूं, लेकिन तुम तो भारी वजन के मनुष्य हो अतः कहां कैसे ले चुं?'

भाई के कार्य के लिए हारुल ने पंखे की तरह अपना वजन हल्का कर लिया । वह क्यारी गेंदा के फूल की तरह छोटा और हल्का बन कर मुरली की पांखों में समा गया । उसे मुरली लेकर चली । मार्ग में कन फड़वे तांत्रिकों का देश आया । वे जादू से मुरली की गति अवरुद्ध कर देते हैं । हारुल को यह बात मुरली ने बताई। उसने उसे कनफड़ों के पास ले चलने के लिए कहा । कनफड़े उसे देख कर बहुत प्रसन्न प्रसन्न हुए--`घर बैठे शिकार स्वयं आ गया ।`

हारुल ने पंचवर्षीय बालक जैसा स्वरूप धारण किया ।

कनफड़ों ने उसका सम्मान करने के पश्चात दुष्टतावश विषपान कराया । हारुल पर विष का किंचित मात्र भी प्रभाव नहीं हुआ ।`विषमय देख शिव ने भरी रखी है अतः अभी विष व्यर्थ है`, उसने कहा --`मेरे भाई को सर्प ने डंस लिया है । उसे तुम लोग आकर स्वस्थ कर दोगे तो मैं तुम्हें जादू का अवतार मान लूंगा जैसा कि लोग-बाग कहते हैं ।`

अपनी -अपनी बीन लेकर कनफड़े हारुल के साथ चल दिये । वहां जाकर हारुल ने बीन बजाने के लिए कहा ।

कनफड़े बीन बजाते-बजाते थक गये लेकिन सर्प नहीं निकला । उनको`झूठा` समझकर हारुल ने क्रुद्ध होकर उनकी बीन, झोली-झंडा छीनकर मार-पीट कर भगा दिया और विचार किया --`भाई के कार्य के लिए अब सूक्ष्म शरीर धारण करके धरती पाताल में प्रवेश करना होगा ।`

ऐसा करके वह पृथ्वी पाताल के भीतर चला गया । वहां नाग सुख-निद्रा में निमग्न था । नागिन निरन्तर पंखा झुला रही थी । हारुल ने नाग को जगाने के लिए कहा । नागिन ने आश्चर्य चकित होकर कहा--`तुम मेरे यहां कैसे आ गये ? तुम जैसे सज्जन-पुरुष के तुम्हारे भाई को नाग डंसने के बाद विश्राम कर रहा है । तुम व्यर्थ में प्राण संकट में न डालो । यहां से चले जाओ ।`

कारख ने पुनः खाने का आग्रह किया । नागिन ने काफी समझाया -रोका अन्त में उसी से खाने के लिए कहा । कारख ने सर्प की पूंछ दबा दी ।

सर्प जागने के बाद क्रोध से कारख की ओर फुंफकारता है । उसके विष के प्रभाव से गौरवर्णी कारख काला हो जाता है और यहीं से उसका नाम परिवर्तित होकर कारख कहलाने लगता है ।

कारख ने शीघ्रता से सर्प का मुंह खोल कर उसकी डाढ़ें पकड़ लीं--` मेरे भाई को जीवित करो अन्यथा मैं तुम्हें चीर दूंगा ।`

सर्पिणी विनती करती है--` सूरमा, मेरा सुहाग मत उजाड़ो ।` सर्प भी विनती करता है । भविष्य के लिए सर्प से कारख ने चार प्रतिज्ञाएं करवायीं--`खाना खाती हुई नारी को सर्प मत काटना । खाट पर कभी विश्राम न करना । घर की देहरी मत लांघना और हल हांकते हुए हलवाहे को नहीं काटना ।`

प्रतिज्ञा के बाद सर्प सूरपाल के जीवन के लिए उपाय बतलाता है--`दूध की नांदें भरवा दो ।` दूध की नांदें भर जाने पर सर्प तलवे से विष निकाल कर उसमें डाल देता है ।

विष निकलने पर सूरपाल की नींद खुलती है,`मुरली मैं बहुत गहरी नींद में सो गया था, लेकिन सिर में जलन क्यों हो रही है ? कारख यहां किसलिए आया है ? यह काला कैसे हो गया है ?

मुरली और कारख पूरा विवरण बतलाते हैं ।

दोनों भाई वहां से चल कर घर-गांव के करीब पहुंचते हैं । मांझधार में जाकर वे मीता से भेंट के लिए बहिन को सूचित करने के लिए कहते हैं ।`छे माह से हम बाहर थे । वह प्रतीक्षा में झरोखे से देखती रहती होगी । यहां जाकर हृदय भर कर भेंट कर ले ।`

मीता बहिन के पास जाता है उसे अकेला आया देख कर एकादी कुछ सोची है लेकिन मीता पूरी बात समझाता है और भाइयों का निमंत्रण सुनाता है । वह

साथ की सहेलियों को भी निमंत्रण देकर साथ ले लेती है। सोलह शृंगार के साथ भाई से मिलने जाती है।

भाइयों की दृष्टि बहिन के साथ सहेलियों पर भी पड़ती है। वे मीरा पर क्रुद्ध होते हैं--" तुमने सहेलियों को क्यों बुलाया। मेरे पास पैसे नहीं हैं, किस तरह उनका सम्मान करूंगा इसीलिए उन्हें जाकर लौटा दो। केवल बहिन अकेले ही पास आये।" मीरा ने ऐसा ही किया। दुःखित होकर सहेलियों ने कहा--" आज भाइयों ने हमारा सम्मान पानी के समान पतला कर दिया है।" एकलादी ने बात सम्हालने की कोशिश की लेकिन वे जिद पकड़ गयीं और उनके पास जातीं हैं। सोने की वर्षा भाई करा देते हैं। मीरा कोठी भर-भर सोना सहेलियों को देकर उनका सम्मान करती है। इसके बाद भाई सहेलियों से लौट जाने का अनुरोध करते हैं। वे लौट जाती हैं।

एकलादी गुरुजनों का स्मरण करती हुई भाइयों की आरती उतारने के बाद भेंट करने के लिए आगे बढ़ती है तब भाई मना करते हैं--" हम से पाप हो गया है, इसी से हम भेंट के योग्य नहीं रह गये हैं। सांगर के यहाँ से चरती गाय तो ले ली लेकिन उसके दूध पीते बच्चे घर में रह जाने से बिलख कर मर गये हैं। प्रायश्चित के लिए हमें हिमालय जाना है।"

बहिन भाइयों से न जाने का अनुरोध करती है--" तुम लोगों के लिए मैंने बारह वर्ष कैलाश पर्वत पर पानी चढ़ाया था। लाखों फूल शिव पर चढ़ाकर के मैंने उनकी कठिन तपस्या की। तुम लोगों के लिए मैंने अपने पति तक की उपेक्षा की। विपत्ति के दिनों में खेत से पक्षी उड़ाने तक का छोटा कार्य मैंने किया। तुम लोगों को पाकर मेरे सभी कार्य सिद्ध हो गये। तुमने मेरे अपमान का बदला लिया, स्नेह दिया है, तुम लोगों के जाने पर किसे भाई कह कर बुलाऊंगी। अभी असाढ़ महीना लगा है, उसके बाद सावन लग जायेगा। वर्षा होने से ताल-तलैया गंगा जल से भर जायेंगे अतः यहीं बैठकर घर में ही हिमालय जैसा तप कर सकते हो।

'ग्रीष्म में ताप से पृथ्वी तप्त हो जाती है। धूप अग्नि बरसाती है, गंगाजली ताल-तलैया सूख जाते हैं। ऐसे तालतलैयों के पानी को गंगाजल मत कहो क्योंकि उनके सूखने पर उसमें कुछ ऐसी घास पर मैंढ लौटने लगती हैं। ऐसा तप तो अयोग्य करते हैं। हिमालय उत्तर में है, भाई कहते हैं --' वहां इतनी शीतलता है कि स्पर्श करते ही अंगुली आदि अंग के ऊपरी भाग की तरह गलकर टूट जाती हैं।'

' बड़े वृक्ष हरे-भरे नहीं होते और न मुर्गे बोलते हैं, बहिन समझाती है, 'हिमालय जाकर भी क्या कोई लौटता है? तुम लोग कष्ट मत उठाओ, तुम्हारे बदले मैं हिमालय में तप कर लूंगी, लेकिन तुम लोग यहीं रह जाओ।'

'वहां का मार्ग बीहड़ है, भाई कठिनाइयां बताते हैं। 'तप करने में देह का कर्म भाव के मांड जैसा बन जाता है। भाई के अपराध के लिए बहन प्रायश्चित करे- ऐसा शोभा नहीं देता, इसीलिए हमें वहां जाना ही चाहिए।'

निराश होकर वह भावनात्मक पक्ष को छूती है, अरे निर्मोहियों तुमने कमलापत को क्यों गोद में खिलाया है, क्यों बड़े प्यार से उसका मानकरण किया? जब मैं तुम्हारी इतनी दुलारी भान्जी का ब्याह रचूंगी तो उसके काम-काज आदि को करने वाला कौन होगा? उस समय कमलापत को हल्दी चढ़ाने वाला भाई कोई भी मुझे नहीं दिखता है। इतने बड़े काम को छोड़कर अरे अधर्मियों तुम हिमालय जाने को कहते हो।'

' बहिन, जिस दिन कमलापत का ब्याह रचना, उस दिन नीम के पेड़ को खबर दे देना, मैं आकर तुम्हारे सभी काम कर दूंगा।' बहिन फिर भी नहीं मानती है तब वे बहाना बनाते हैं, 'बहुत जोरों से प्यास लगी है। होठों में पपड़ी पड़ी जा रही है। आंखों के आगे अंधेरा छा आ रहा है। नदी जाकर पानी लेते आओ।'

इलादी कमलापत से कहती है,' तुम घोड़े की रास पकड़े रखना, छोड़ना नहीं अन्यथा मामा छल-बल करके चला जायेगा।' वह पानी लेने नदी जाती है। वहां जाकर स्नान करने के साथ देवताओं को जल चढ़ाती है। पहला लोटा सूर्य को, दूसरा बालाजी को, तीसरा लोटा शिव जी को और चौथे लोटे में पानी भर कर

चलती है।

इसी बीच भाई मालथी से बहाना बनाते हैं। 'घोड़ा घर में रह गया है, दौड़ कर उसे ले आओ।'

'भाभा झूठ मत बोलो', कमलापत कहती है, 'घोड़ा तो घोड़े के दाहिने तरफ है।'

भाई माया फैलाते हैं। घोड़ा गिर कर सर्प का रूप धारण कर लेता है। भयभीत कमलापत से राह छूट जाती है। वे तेजी से घोड़ा बढ़ा देते हैं।

नदी से आते समय बहिन उन्हें एक ऊँचे स्थान से भाइयों को देखती है। उसे केवल कमलापत की रोती-सिसकती मिलती है। 'भाई चले गये हैं' समझकर विलाप करती है, धरती पर पिछड़ती है। बेटी उसे पूरी बात बतलाती है।

बेटी को गोद में लेकर वह नीम के पास जाती है— 'नीम मैंने तुम्हारा बहुत उपकार किया है लेकिन आज तुमने धोखा दे दिया है। भाइयों को अपनी ओट से तुमने क्यों निकल जाने दिया। मैं शाप देती हूँ कि तुम पत्रविहीन हो जाओगी।'

'बहिन व्यर्थ के लिए परेशान न हो,' भाई हिमालय चले गये हैं। तुम घर लौट जाओ।'

'वहां से चल कर विलाप करते हुए वह पहाड़ी की तरफ जाती है, 'तुमने मेरे भाइयों को अपनी ओट में छिपा रखा है। मेरे शाप से तुम पानी बन कर बह जाओगी।'

'पहाड़ी उसे भाइयों के हिमालय चले जाने की सूचना देती है।'

निराश होकर रुक्लावती घर के लिए चल देती है। रास्ते में उसे अकेले आते देखकर लोगों ने कहा, 'यह डाकिन है। इसने अपने माता-पिता को नष्ट कर दिया था। आज अपनी आँखों के सामने भाइयों को हिमालय में नष्ट होने के लिए छोड़ आई है। ऐसी निर्दयी, कठोर, दुष्ट के लिए हमारे घर में कोई जगह नहीं है।'

किसी ने अपने यहां उसे स्थान नहीं दिया। वह विलाप करती हुई घर-घर गयी लेकिन सभी लोग उसे देख कर दरवाजा लगा लेते थे। उसका वहां कोई भी सम्मान नहीं रह गया। वह भैरव के पास गयी। उसने उसे सम्मान शरण दी और कन्यादान के सभी शादी के कार्यों को संपन्न करने का आश्वासन दिया।

भाइयों ने हिमालय जाकर घोड़ा बरगद की ओट में बांधा। बन मुरली को बरबरा पेड़ के कांख में टांग दिया। उन्होंने पंचवटी तैयार की। मूंज की लंगोटी, तुलसी की माला और देह में भभूत लगाकर वे तप करने लगे। पहली माला के फेरते समय उन्होंने माता-पिता का स्मरण किया। दूसरी माला में गुरु भोला का बखान किया। तीसरी माला के फेरने से हिमालय में दावाग्नि लग गयी।

करबद्ध हिमालय ने उनसे प्रार्थना की, "तुम लोग कहां से हो? किसलिए इतना भीषण तप कर रहे हो। मेरे सभी जीव-जन्तु तप से जले जा रहे हैं। ऐसा तप मत करो।"

उन्होंने हिमालय को तप का प्रयोजन बतलाया।

"तीन दिन तक तुम लोग तप मत करना," हिमालय ने अनुरोध किया, "तब तक मैं कुछ न कुछ तुम्हारे लिए प्रबन्ध कर दूंगा। मेरे यहां के हंस कमलयुक्त मोती झील को छोड़कर चले गये हैं। समुद्र ने भी तुम्हारे तप से तप्त होकर अपनी मर्यादा छोड़ दी है।"

हिमालय से उड़कर हंस रत्नावती की नगरी में पहुंचते हैं। वह हंसों को यहां देख कर चकित होती है, "हंसों, क्या तुम्हारे देश में सूखा पड़ गया है या बहुत खराब समय आ गया है? तुमने मोती झील क्यों छोड़ दी?"

"दो तपस्वियों के तप के कारण उन्हें विवश होना पड़ा है", हंस उत्तर देते हैं।

रत्नावती को पूरा विश्वास होता है कि वे तपी उसके भाई हैं। वह हंसों से वहां से चलने का अनुरोध करती है। उनके राजी हो जाने पर सूक्ष्म शरीर धारण करके साथ में हिमालय जाती है।

इसी बीच में हिमालय ने हरी दरबार में कहा, 'दो तपियों के कारण मेरी मर्यादा भंग हो रही है। फौरन उनका बुलावा अपने दरबार में करा दें।'

शिव जी ने उनको लेने के लिए विमान भेज दिया। तपियों से कहा गया, 'हरी दरबार में तुम्हें बुला लिया गया है। विमान में आकर बैठो।'

उन्होंने विमान में बैठ कर भीखा से कहा, 'तुम यहीं तप करते रहना।'

भीखा ने विनती की, 'मैं कम उम्र से ही तुम्हारी सेवा में संलग्न रहा। यहां तक कि मैं वृद्ध भी हो गया। तुम्हारा छोटा-बड़ा सभी काम मैंने किया है। तुम्हारे कारण मैं भी हरी दरबार देख लूंगा, अतः मुझे अकेला मत छोड़ो।'

भीखा को भी वे साथ लेकर हरी दरबार के लिये चले गये। हंसों के साथ रुहलादी 'भैया-भैया' जोरों से पुकारती हिमालय आयी लेकिन भाई उसे दृष्टिगत नहीं हुए। भाइयों के हरी दरबार चले जाने के कारण वह विलाप करती है। हंसों से उसे वापस लौटा देने का अनुरोध करती है। हंस उसे वापस छोड़ कर मोती चुगने के लिये चल देते हैं।

हरी दरबार में दोनों भाई चौपड़ खेलते हैं। बारह वर्ष चौपड़ खेलते-खेलते बीत जाते हैं।

यहां नगरी में रुहलादी कन्यादान का ब्याह रचती है। पूर्व बात का स्मरण करके वह भीम के पास न्योता लेकर जाती है, 'दूज को मंढ़वा है, तीज को भायना है और चौथ को सजन पहुंच के द्वार के लिए सजावट होगी। भान्जी के विवाह में मामा के बिना मंडप सूना लगता है इसीलिए मेरी ओर से उन्हें निमंत्रण दे देना।'

भीम आश्वासन देता है, 'तुम जाकर अपने काम देखो। तुम्हारे भाई जरूर आयेंगे।'

हरी दरबार में भाइयों के जीते हुए पांसे उलट गये। उन्होंने भीखा से वजह जाननी चाही। भीखा ने उन्हें बहिन के साथ किये गये वादे की याद दिलायी। उन्होंने भीखा को पर्याप्त धन, सवारी देकर पूरा विवरण जानने के लिये भेजा।

भीखा रहलादी के पास जानकारी के लिये गया । भीखा के आगमन से वृक्षों में हरियाली आने लगी, बेलें फूलने लगीं । बहिन को इस शुभ संकेत से भाइयों के आने का पूरा विश्वास हो गया । भीखा ने रहलादी से समाचार लेकर भाइयों को सूचित किया ।

भाइयों ने विवाह कार्य के लिये हरी से अवकाश की प्रार्थना की । हरी ने चार दिन की अवधि में लौटने की शर्त की । 'चौथे पांचवां दिन होने पर उनके हरी दरबार में आने का मार्ग बन्द हो जायेगा ।' कठोर शर्त रखी ।

हरी दरबार से अवकाश पाकर भाइयों ने मान्थी के विवाह कार्यों को सम्पन्न किया लेकिन काम-काज में पांच दिन लग गये । इसलिए वे हरी दरबार नहीं जा सके ।

कथानक शिल्प निर्माण का विधान

'कारसदेव की गोटें : लौकिक वीर काव्य' की कथा का आधार नितान्त मौलिक है । वेद, पुराण, महाभारत, उपनिषद्, जातक, साहित्यिक ग्रन्थों आदि में भी इस प्रकार की कथा का किंचित मात्र भी उल्लेख प्राप्त नहीं होता है । संभव है आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व बुन्देलखण्ड या उसके आस-पास किसी पराक्रमी युवती ने किसी सांड, बैल या गाय आदि पशु को जो उसके मार्ग में बाधक होगा उसे उसके सींग आदि पकड़ कर शक्ति-युक्ति से परास्त कर दिया होगा । उसके पराक्रम के सम्बन्ध में सुन कर राजा या जमींदार लड़की की वीरता पर मुग्ध हो गया होगा । इसी बात को प्रस्तुत काव्य में युवती के चरित्र में उत्कृष्टता और रोचकता लाने के लिये गाय-सांड या बैल के स्थान पर राजा के मदमस्त गजराज को परास्त करते दिखाया गया है । युवती के पराक्रम से प्रभावित राजा ने स्वयं या अपने पुत्र का उससे विवाह करने की इच्छा की होगी । गांवों में विवाह कम उम्र में ही हो जाता है अतः युवती के पिता ने असमर्थता प्रकट की होगी । कुछ राजा या जमींदार के अत्याचार से विवश होकर उन्हें ग्राम आदि छोड़ना पड़ा होगा । अब उनके लिये

घोर अपमान और असह्य वेदना का विषय था । दूसरे राज्य में उनको शरण मिली होगी । भाइयों के अभाव के कारण उस एक लड़की ने अपनी सेवा, चरित्र, पराक्रम या व्यक्तित्व के प्रभाव से किसी धार्मिक, चरित्रवान, पराक्रमी पुरुष को अपना धर्म भाई बना लिया होगा जिसने उस अत्याचारी राजा या जमींदार से बदला लिया होगा । उस धार्मिक, पराक्रमी, चरित्रवान ने अनेकों सत्कर्म, जन-कल्याण संबंधी कार्य, उपकार आदि किये होंगे जिससे जनता उसे देव-तुल्य सम्मान, श्रद्धा देने लगी होगी । इसी ने धीरे-धीरे जननायक स्वरूप धारण कर लिया होगा । चौपाल, पूजा गृहों, धार्मिक-सामाजिक उत्सवों आदि में उसके कार्यों, कहानियों आदि का वर्णन क्रमशः वृद्धि को प्राप्त करता हुआ, अतिरंजित होता चला गया होगा ।
प्रत्येक मौखिक काव्य, कहानी आदि में समय के साथ उसमें कुछ न कुछ जुड़ता-घटता-बढ़ता रहता है । लोग-बाग अपनी मन की भावनाओं को भी कुशलता से उसमें आरोपित कर देते हैं । उसे और भी अधिक श्रेष्ठ, सम्माननीय, प्रभावशाली, उदात्त आदि बनाने के लिये उसमें अलौकिक गुणों, विलक्षण कार्यों का समावेश करते चले जाते हैं । कृष्ण का चरित्र इस प्रकार का सुन्दर उदाहरण है । महाभारत के राजनीतिज्ञ कृष्ण श्रीमद्भागवत के समय तक सर्वगुण सम्पन्न, चौसठ कलाधारी कृष्ण बन जाते हैं ।

जन साधारण के लिये भगवान् या अवतारी पुरुष साधारण रूप से जन्म नहीं लेते । 'उनके अवतार धारण करने का विशेष उद्देश्य होता है ।' भक्तों की इच्छा की पूर्ति, व दुष्टों का दमन, शांति, सुव्यवस्था, धर्म की स्थापना उनका प्रमुख उद्देश्य होता है । रक्तादी के वध से प्रसन्न शिव द्वारा अंश उनके अंश से कोरसदेव की उत्पत्ति होती है ।

साहित्य और जन-सामान्य कोयल के स्वर को मादक, सुरीला मानते आये हैं । प्राचीन समय में शिकार और शौक के लिये बाज, बटेर, तीतर आदि पक्षी साथ में रखते थे । संभवतः इसी भावना से प्रेरित होकर सुरली पक्षी की कल्पना की गयी जिसे शूरपाल युद्ध में भी अपने साथ ले जाते हैं । कृष्ण की मुरलीवादन के प्रभाव से नर-नारी, पशु-पक्षी, जड़-चेतन के मंत्र-मुग्ध सम्मोहित हो जाने की

जन-सामान्य, साहित्य की कल्पना से प्रभावित होकर मुरली पक्षी के मधुर स्वर-युक्त गायन से प्रस्तुत काव्य में पशुओं को वशीभूत कराया गया है।

यद्यपि पाण्डवों ने धर्मयुद्ध किया था, स्वयं ईश्वर के अवतार कृष्ण उनके साथ में थे किन्तु अन्त में मुक्ति के लिये पाण्डव हिमालय गये। जनमानस में भी हिमालय अत्यन्त पवित्र ऋषियों की तपोभूमि, शिव का निवास स्थान, मुक्ति का स्थान माना जाता रहा है। आल्हा और सूरपाल शिव के अवतार तो हैं किन्तु बछड़-बछियों के मर जाने के अनजाने पाप का प्रायश्चित हिमालय में तपस्या से करते हैं।

संभवतः इसी धनी वणिक गूजर की पुत्री विवाह में उस पराक्रमी, धार्मिक, चरित्रवान पुरुष को काफी बड़ा त्याग करना पड़ा होगा। कालान्तर में लोगों ने अलौकिकता, रोचकता, श्रद्धा उत्पन्न करने के लिये इसी प्रसंग में अद्भुतपूर्व परिवर्तन कर दिया होगा और आल्हा को शिव से मात्र चार दिन तक के अवकाश की अवधि में वापस न होने के कारण हरी दरबार जैसे उच्च दुर्लभ स्थान के निर्वासन का दण्ड सहना पड़ा। कल्पना का रूप दे दिया होगा।

इस प्रकार लौकिक कथा को अलौकिक रूप 'आल्हा देव की गोटें : लौकिक वीर काव्य' में समय-समय पर दिये जाते गये। यह एक लोक वीर गाथा थी अतः समय के साथ परिवर्तित; परिवर्तन, परिवर्धन, अलौकिकता, चमत्कारों आदि की वृद्धि समाविष्ट होती रही। ऐतिहासिक राम और कृष्ण को भी कालान्तर में देवत्व रूप प्रदान किया गया और अनेक अलौकिक गुणों का समावेश करके उनके द्वारा अद्भुत कल्याणकारी कार्यों आदि की कल्पना की गयी।

प्रबन्ध की विशेषतायें

समान नायकत्व

प्रस्तुत 'आल्हादेव की गोटें : लौकिक वीर काव्य' में आल्हा के अलावा उनका भाई सूरपाल भी है। दोनों ही शिव के अंश से उत्पन्न हैं, और उनका जन्म साथ-साथ फूल से होता है। शिव के वरदान से रुक्मादी को फूल मिलता है, वह झोली में फूल लेकर आती है। घर की देहरी पार करते समय फूल दो भाइयों

में परिवर्तित हो जाता है --

"हे फुलवा तो आ गये बहिनी की गोंदा रे संभार
हे मत भरो इक्लादी भरथ के धारा है
हे देहरी नांघत तो गये फड़के लाल - - -
हे अरनी माता बहिन जी को रही समझाये - - -
हे सूरज के भातक किनके से आई रे सुराय - - -

दोनों ही भाई बिल्कुल एक जैसी शक्ल-सूरत, रूप, आचार-विचार, व्यवहार के हैं। सूरपाल के सर्प दंशित होने पर कारख सर्प के घर में प्रविष्ट होता है। सर्पिणी कारख और सूरपाल की अद्भुत समानता देख कर चकित होती है --

"तोरी सूरत सूरत को जो तोरो भैया कहिये उस बार हो"

प्रस्तुत लौकिक वीर-काव्य के पूर्वार्द्ध में सूरपाल की प्रधानता है। वह बहिन को अपमानित करने वाले राजा गजढूँढा और पुत्री के पति को परास्त करके बदला पूरा करता है। उत्तरार्द्ध में सर्पदंशित सूरपाल को कारख सर्प को विवश करके उसे पुनर्जीवित कराता है। इसमें कारख की प्रधानता है। और अन्त में दोनों की समान रूप से प्रधानता है। वे बहिन से भेंट करने के बाद हिमालय में जाकर तप करते हैं और शिव के दरबार में स्थान प्राप्त करते हैं, और आज्ञानुसार मान्धी के विवाह कार्य को जाकर सम्पन्न करते हैं।

इस प्रकार कार्य-व्यापार, चरित्र, फल, आदि सभी दृष्टिकोणों से दोनों भाई समान रूप से नायक प्रमाणित होते हैं।

<u>नायिका का अभाव</u> - साहित्यिक सिद्धान्तों के अनुसार तो कारखदेव की गोटें में नायिका का अभाव है। कारख देव की बहिन और माता के सिवा अन्य कोई स्त्री पात्र विशेष महत्वपूर्ण नहीं है। मामा जी की पत्नी और मेवल की पत्नी बहुत थोड़े समय के लिए अवतरित होती हैं। लेकिन देखा जाये तो संपूर्ण इस वीर-लोक-काव्य में इक्लादी पूरी तरह से छायी है।

इक्लादी गोरी, भोली, स्वाभिमानी, अपूर्व बल शाली, साहसी, भाइयों

आदि से स्नेह रखने वाली, पद्मिनी, दुःखी है।

सारी कहानी एकलादी के चारों ओर घूमती रहती है। मार्ग अवरुद्ध होने पर वह हाथी को परास्त करती है, राजा गरूदहा के अत्याचार से पिता को पीड़ित देख कर वह माता जी के राज्य में शरण लेती है। शिव को अपने तप से सन्तुष्ट करके राजा गरूदहा से बदला लेने के लिए उन्हीं के अंशावतार से दो भाइयों के वर की प्राप्ति करती है। भाइयों के पालन-पोषण में काफी कष्ट सहन करती है। सूरपाल उसके अपमान का बदला लेता है। सूरपाल के साथ की युवती को अचानक आया देख कर 'नमक हरामी' के विचार से वह क्रोधित होती है। इसी प्रकार कारख और सूरपाल के साथ गये मीला को अचानक आया देख कर उस पर भी बिगड़ती है। अपने पाप के प्रायश्चित के लिए भाइयों के हिमालय चले जाने पर वह करुण विलाप करती है, और जिन्हें तरु-गिरि ने उन्हें अपने अन्दर नहीं छिपा लिया है, इस कारण नीम और पहाड़ी अपनी-अपनी सफाइयां देती हैं। हंसों द्वारा भाइयों के सम्बन्ध में छोटा सा समाचार मिलते ही, पुत्री, गांव-घर सब को छोड़ कर हंसों के साथ जाकर हिमालय में भाइयों की तलाश करती है। और अन्त में उसकी पुत्री के विवाह में आये कारख देव शिव द्वारा निर्धारित वक्त पर न लौट सके थे कारण मार्ग भ्रष्ट हो जाते हैं। 'नायिका' के विस्तृत अर्थ में एकलादी को प्रस्तुत लौकिक वीर-काव्य की नायिका स्वीकार कर सकते हैं।

<u>शिव का अवतार</u> - सामान्य रूप में विष्णु साधु-सन्त, सज्जन, भक्तों का कष्ट दूर करने, दैत्यों का दमन और धर्म की स्थापना के लिए अनेकों बार अवतार लेते हैं, किन्तु प्रस्तुत लौकिक वीर-काव्य में शिव के अवतार की बात विचित्र सी है। यद्यपि शिवपुराण आदि में शिव के अनेक अवतारों का वर्णन किया गया है। किन्तु वे विष्णु की सापेक्षता में वर्णित हैं, जन साधारण में इस प्रकार की व्याप्ति नहीं है, जैसा कि विष्णु के राम और कृष्ण अवतार रूपों की है।

<u>अहिंसात्मक युद्ध विजय</u>- युद्ध भूमि में कारख देव शिव के अवतार होते हुए भी

नितान्त अहिंसक है। पशुओं के छिन जाने के समाचार से क्रुद्ध राजा गरूरढ़ा सेना के साथ हरपाल से युद्ध के लिए आता है। हरपाल मोती की वर्षा कर देता है। सेना मोती बटोरने लगती है। मोती बटोरने के बाद, ये मोती हमारे जीवन-निर्वाह के लिए आजीवन पर्याप्त हैं, फिर क्यों व्यर्थ में लड़कर प्राण गवायें, आखिर पेटों के लिए ही हम राजा की सेवा करते हैं, सोच कर सारी सेना लौट जाती है, और एकमात्र अवशिष्ट राजा गरूरढ़ा की अत्यन्त अपमानजनक पराजय होती है। इसी तरह हरियाने में गरूरढ़ा की बेटी के द्वारा क्रोध दिलाये जाने पर उसका पति हरपाल से सेना के साथ युद्ध करने आता है। हरपाल चमत्कार से उसे सेना सहित भेड़-बकरी बना देता है। अन्त में गरूरढ़ा की बेटी के बहुत अनुनय-विनय पर उनका पुराना स्वरूप वापस करता है, और उसका पति क्षमा याचना करता है।

इस प्रकार बिना किसी का वध किये या बिना रक्तपात के ये गरूरढ़ा और उसके दामाद को अहिंसात्मक रूप से पराजित करते हैं। बुंदेलखण्ड में हरदेव को इतना श्रेष्ठ और लोकप्रिय बनाने का श्रेय इसी लौकिक वीर-काव्य को है।

<u>सर्प-प्रतिज्ञा-</u> बुंदेलखण्ड में लोगों को विश्वास है कि हरदेव ने जैसा कि प्रस्तुत लौकिक वीर-काव्य में भी वर्णित है, सर्प को परास्त करने के बाद प्रतिज्ञा करवायी --अनाज पोसती नारी, हल हांकते हुए हलवाहे को सर्प नहीं डसता है, और न सर्प चारपाई पर विश्राम करता है, घर की देहरी को भी नहीं लांघता है

<u>दरबार त्याग-</u> प्रायश्चित्त के लिए जाते समय हरदेव बहिन को भान्जी के विवाह-कार्य में आने के लिए वादा करते हैं। भान्जी के विवाह के समय सीता की सूचना के अनुसार शिव से वे अवकाश की याचना करते हैं। शिव उनसे शर्त कराते हैं चौथे दिन से पांचवा दिन न लगाना, अन्यथा हमारे दरबार का मार्ग तुम्हारे लि बन्द हो जायेगा। वे बहिन के घर विवाह कार्य संपन्न कराते हैं, इस कार्य में पू निर्धारित चार दिन के स्थान पर पांचवा दिन कार्य की अधिकता के कारण हो जाता है और उनके लिए शिव के दरबार का मार्ग बन्द हो जाता है। बहिन-भाई के उनके प्यार के साथ, विवाह कार्य संपन्न कराने की प्रतिज्ञानुसार इतना बड़ा ट वे करते हैं।

----0----